

डॉ. अगस्त कोंकेल, क्रॉनिकल्स, सत्र 7, राजा दाऊद

© 2024 गस कोंकेल और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. ऑगस्ट कुंकेल हैं जो इतिहास की पुस्तकों पर अपना शिक्षण दे रहे हैं। यह सत्र 7 है, राजा डेविड।

इतिहासकार ने अपने लोगों की पहचान स्थापित करने पर अपना खंड पूरा कर लिया है।

ये वे लोग हैं जो उसके समय में फारसी राज्य येहुद में यरूशलेम के आसपास रहते थे। अब यह उनका काम है कि उन्हें समझाए कि वे इतने महत्वपूर्ण क्यों हैं। कि वे वास्तव में सभी राष्ट्रों के केंद्र हैं और वे ही एकमात्र राज्य का प्रतिनिधित्व करते हैं जो मायने रखता है।

अब, हमें उससे परिचित कराने के लिए, वह यह वर्णन करके शुरू करता है कि वे कैसे एक राष्ट्र बन गए। वे कैसे एक लोग बन गए? हम कह सकते हैं कि वे एक राष्ट्र बन गए और मूसा के साथ एक लोग बन गए, लेकिन इतिहासकार की दिलचस्पी इसमें नहीं है क्योंकि वह उस छुटकारे के वादे पर ध्यान केंद्रित कर रहा है जो परमेश्वर ने दाऊद से किया था। इसलिए, उसे दाऊद को उस व्यक्ति के रूप में प्रस्तुत करने की ज़रूरत है जो परमेश्वर ने चुना है।

शमूएल में जिसका वर्णन परमेश्वर के हृदय के अनुसार किया गया है। शमूएल में यह अभिव्यक्ति परमेश्वर की योजना और परमेश्वर की सोच के संदर्भ में है। ऐसा नहीं है कि दाऊद ने परमेश्वर को चुना है, बल्कि ऐसा है कि परमेश्वर ने दाऊद को चुना है।

क्योंकि परमेश्वर ने दाऊद को चुना है, इसलिए दाऊद परमेश्वर के कार्य और उद्धार का प्रतिनिधित्व करेगा, जो परमेश्वर का राज्य है। इसलिए मैं हमें इतिहास की रूपरेखा पर वापस ले जा रहा हूँ, जिससे हमने शुरुआत की थी और जिसे हमने अब पूरा कर लिया है, अध्याय एक, जिसका संबंध प्रतिज्ञा के राष्ट्र से है। यहाँ, हम इस बारे में बात करना चाहते हैं कि उन्हें एक राष्ट्र क्या बनाता है, जिसे इतिहासकार एक राज्य कहते हैं।

अब, बेशक, उससे पहले भी एक इतिहास था। दाऊद से पहले भी एक राजा था। इतिहासकार को अच्छी तरह पता है कि दाऊद इस्राएल का पहला राजा नहीं है, और वह यह स्पष्ट करना चाहता है कि दाऊद परमेश्वर के दिल के मुताबिक क्यों है जबकि शाऊल नहीं था।

इसलिए, अब वह शाऊल की कहानी को आगे बढ़ाता है, और शाऊल की कहानी को आगे बढ़ाने के लिए, हमें इतिहास की पुस्तक में वास्तव में एक दोहराव मिलता है। शाऊल का परिवार, जैसा कि हम अध्याय 9, श्लोक 35 से 44 में पाते हैं, वह लगभग वही दोहराव है जो हमें शाऊल के परिवार के बारे में बताया गया था जो गिबोन में तैनात मिलिशिया का हिस्सा था। इसलिए, इस पर और कोई टिप्पणी करने की आवश्यकता नहीं है।

यह हमें फिर से शाऊल के व्यक्तित्व और उसके व्यक्तित्व से परिचित कराता है। अब, अध्याय 10 की इन छोटी 14 आयतों में, इतिहासकार ने शाऊल और उसके बेटों की गिलबोआ की पहाड़ी पर पलिशियों के खिलाफ़ हारने वाली लड़ाई में हुई मौत की विस्तृत कहानी के बारे में जो कुछ भी हम जानते हैं, उसका सारांश दिया है। जैसा कि हम याद कर सकते हैं, जब वह लड़ाई हुई थी, तब दाऊद पलिशियों के साथ सिकलग शहर में शरणार्थी था, वह शहर जिसे पलिशियों ने उसे अपने सैनिकों और अपने आदमियों के लिए एक जगह के रूप में और एक ऐसी जगह के रूप में दिया था जहाँ से वह काम कर सकता था।

तो यही वह जगह है जहाँ दाऊद था, और वास्तव में, शमूएल हमें बताता है कि कैसे पलिशियों ने दाऊद को शाऊल के खिलाफ़ लड़ाई में शामिल होने से बाहर रखा क्योंकि उन्होंने कहा कि दाऊद हमारे लिए शैतान होगा, जिसका मतलब है दुश्मन। वह हमें धोखा देने जा रहा है क्योंकि, आखिरकार, वह वही है जिसके बारे में इस्राएलियों ने कहा था कि शाऊल ने उसके हज़ारों लोगों को मार डाला था, लेकिन दाऊद ने उसके दस हज़ार लोगों को मार डाला है। तो, दाऊद सिकलग में था, शाऊल गिलबोआ पर्वत पर युद्ध कर रहा था, और यह एक बहुत ही भयावह समय था जिसमें वे अपने पुराने दुश्मनों, पलिशियों के लिए एक भी मुकाबला नहीं कर सकते थे, और शाऊल के शरीर को अपमानित किया गया और युद्ध के बाद गिलाद के याबेश के लोगों द्वारा बचाया गया।

इतिहासकार को इनमें से किसी से कोई सरोकार नहीं है। वह सिर्फ़ इस सवाल से सरोकार रखता है कि शाऊल को राजा के पद से क्यों हटाया गया? शाऊल को राजा के पद से क्यों हटाया गया, इस सवाल का उसका जवाब वास्तव में अध्याय के अंतिम छंदों में आता है, जहाँ इतिहासकार अपनी कुछ शब्दावली का परिचय देता है, और मैं उस शब्दावली में से कुछ को यहाँ फ़िलिप चार्ट पर डालने जा रहा हूँ क्योंकि यह विशेषता बनने जा रही है और बार-बार पेश की जाएगी। एक हिब्रू शब्द है जिसे हम मा'अल के रूप में लिख सकते हैं, और इसका आमतौर पर विश्वासघाती होने के रूप में अनुवाद किया जाता है।

अब, यह वह पाप होगा जो परमेश्वर के न्याय को लाएगा, चाहे वह कोई व्यक्ति हो या पूरा राष्ट्र जब वे बेबीलोन में जाते हैं। लेकिन जब आप वाचा के प्रति विश्वासघाती होते हैं, जब आप वफ़ादारी की शपथ नहीं निभाते हैं, जो कि बेरीट, वाचा का प्रतिनिधित्व करती है, तो आप परमेश्वर की दया खो देंगे, और आप विश्वासघात के लिए न्याय किए जाएँगे। इसलिए, शाऊल का न्याय किया गया क्योंकि वह विश्वासघाती था।

इतिहासकार इसे जिस तरह से समझता है और जिस तरह से वह अन्य प्रकार के पापों को समझता है, उसमें अंतर है। ऐसा नहीं है कि दाऊद ने बड़े पाप नहीं किए, जिसके बारे में हर कोई जानता है। बतशेबा की कहानी के बारे में किसने नहीं सुना है? लेकिन इतिहासकार कभी इसका जिक्र नहीं करने वाला।

पूरा मुद्दा यह है कि दाऊद इस बिंदु पर आ सकता है जहाँ वह कहेगा, धन्य है वह जिसका पाप क्षमा किया गया है, जिसका अपराध ढँका गया है। दूसरे शब्दों में, दाऊद अभी भी मा'अल का

विपरीत है। वह विफल हो सकता है, वह पाप कर सकता है, लेकिन यह उसे उसके विश्वास के इरादे के प्रति विश्वासघाती नहीं बनाता है।

शाऊल इस मामले में बेवफ़ा है कि अब वह परमेश्वर पर भरोसा नहीं करता। परमेश्वर पर भरोसा न करना, यह बेवफ़ाई, वह चीज़ है जो निंदा करती है। दूसरा शब्द जो इतिहासकार बार-बार इस्तेमाल करने जा रहा है, वह है हिब्रू शब्द दाराश।

अब, यह शब्द तलाशने के लिए है। तो, परमेश्वर के आशीर्वाद का अनुभव करने का तरीका वफ़ादारी के माध्यम से है। और परमेश्वर के आशीर्वाद का अनुभव करने का तरीका तलाशने के द्वारा है।

शाऊल की घातक गलती क्या थी? जब वह विश्वासघाती होने के कारण प्रभु से कोई संदेश नहीं पा सका, तो वह भूत-प्रेत का पता लगाने वाले से मिलने गया। वह उत्तर की तलाश में था। वह जानना चाहता था कि पलिशियों के खिलाफ क्या होने वाला है।

और वह यह देखने जाता है कि इब्रानियों में ओब को क्या कहा जाता है। यह वह व्यक्ति है जो आत्मा को बढ़ाने वाली स्थिति के माध्यम से मृतकों से संवाद करता है। वह एन्डोर जाता है और उस व्यक्ति को ढूँढता है जो उसे वह संदेश देगा।

आपको अच्छी तरह याद होगा कि शमूएल ने शाऊल को कैसे दर्शन दिए और उसे निंदा संदेश दिया। शाऊल ने प्रभु की खोज नहीं की। इसके बजाय, उसने एक भूत-प्रेत से मदद मांगी, जो पूरी तरह से निषिद्ध था।

इसका मतलब है कि शाऊल अयोग्य है। वह ऐसा व्यक्ति नहीं हो सकता जो परमेश्वर के दिल के मुताबिक हो। यह हमें दाऊद की कहानी से परिचित कराता है और यह बताता है कि दाऊद राजा क्यों बनता है, जबकि वास्तव में वह सिकलग में शरणार्थी था।

और यहीं से इतिहासकार दाऊद की कहानी शुरू करता है। वह शाऊल से भागते समय सिकलग में शरणार्थी होने से शुरू करता है। और फिर वह दिखाता है कि कैसे दाऊद राज्य का उत्तराधिकारी बना।

दाऊद किस तरह इस्राएल के सिंहासन पर बैठा। इन आयतों में, फिर से, दाऊद के योद्धाओं के बारे में बहुत सारे नाम हैं। और इसलिए, वे शायद बहुत ज़्यादा अर्थपूर्ण न लगें, लेकिन वे वास्तव में एक पैटर्न में हैं।

इसलिए, मैंने सोचा कि हमें इस बात पर ध्यान देना चाहिए कि इतिहासकार ने किस तरह से इस पूरी घटना को प्रस्तुत किया है कि कैसे दाऊद राजा बना। और इतिहासकार के दृष्टिकोण से, जिस क्षण शाऊल को अयोग्य घोषित किया गया और गिलगाल की पहाड़ी पर उसकी मृत्यु हुई, उसी क्षण दाऊद को राजा के रूप में पुष्टि मिल गई। इसलिए, हमारे पास उन सात वर्षों की ऐतिहासिक प्रक्रिया के बारे में कोई संकेत नहीं है जो दाऊद के हेब्रोन आने और राजा घोषित

किए जाने और फिर यरूशलेम पर विजय प्राप्त करने और वहाँ अपना शासन स्थापित करने के बीच थे।

इतिहासकार को उस कालक्रम में कोई दिलचस्पी नहीं है। इसके बजाय, वह यह देखने का एक एकीकृत तरीका प्रस्तुत करना चाहता है कि कैसे सारा इस्राएल, सारा इस्राएल, उत्तर से दक्षिण तक, हर जगह, दाऊद का समर्थन करता है। अब्रेर और योआब के बीच युद्धों और जिस तरह से यह संघर्ष हुआ, जब तक कि अब्रेर अंततः दाऊद के पास नहीं चला गया और उन्होंने राज्य को एकीकृत नहीं कर दिया, उसका कोई उल्लेख नहीं है।

इतिहासकार के दृष्टिकोण से, परमेश्वर ने यह सब किया था। और परमेश्वर ने यह सब किया था, यह इस बात से स्पष्ट है कि आप देखते हैं कि दाऊद को पूरे इस्राएल का समर्थन प्राप्त था। और आप कैसे देखते हैं कि दाऊद को पूरे इस्राएल का समर्थन प्राप्त था? खैर, आप उसके हेब्रोन आने और राजा बनाए जाने से शुरू कर सकते हैं।

फिर, हेब्रोन में दाऊद को जो समर्थन मिला था, वह उन सभी सैनिकों द्वारा बढ़ाया गया है जिन्होंने पहले सिकलग में उसका समर्थन किया था और समय में पीछे जाकर, किले में दाऊद का समर्थन करने वालों ने भी। और फिर किले में दाऊद का समर्थन करने वाले लोगों के इस बदलाव की पुनरावृत्ति है। अदुल्लाम वह स्थान है।

फिर वह उन लोगों को दोहराता है जिन्होंने सिकलग में दाऊद का समर्थन किया और फिर हेब्रोन में। और अब यह दाऊद के राज्य के हस्तांतरण के साथ समाप्त होता है। तो, पूरी बात एक पूरे के रूप में बनाई गई है, एक एकल इकाई के रूप में जिसमें दाऊद जॉर्डन के पूर्व, जॉर्डन के पश्चिम और यहूदा से पूरे इज़राइल का राजा है।

सारा इस्राएल दाऊद का समर्थन करता है। अब, हम दाऊद के सिंहासनारूढ़ होने की बात पर आते हैं, जिसे इतिहासकार ने इस पूरे वृत्तांत के आरंभ में ही पहले नौ श्लोकों में प्रस्तुत किया है। और वह सबसे पहले, उस वाचा के बारे में बात करता है जो सारा इस्राएल दाऊद के साथ बाँधता है।

अब, यह वास्तव में महत्वपूर्ण है क्योंकि यदि आप शमूएल के पास वापस जाते हैं, तो यह यहूदा के लोग हैं जो आते हैं और कहते हैं, ठीक है, आप जानते हैं, शाऊल हार गया है, और हमें एक राजा की आवश्यकता है, और हम चाहते हैं कि आप हमारे राजा बनें। और परमेश्वर ने दाऊद को हेब्रोन जाने का निर्देश दिया। लेकिन दाऊद ने पहले ही इतिहासकार के मन में वफ़ादारी पैदा कर ली थी।

और वास्तव में, उसने पूरे इस्राएल में लोगों से वफ़ादारी हासिल की है। और इसलिए हेब्रोन में दाऊद का राज्याभिषेक करके उसे राजा बनाना दाऊद के सभी शक्तिशाली लोगों का एकजुट कार्य है। फिर वह यरूशलेम की विजय के बारे में बात करता है।

जैसा कि मैंने उल्लेख किया है, युद्ध के कालक्रम का कोई उल्लेख नहीं है, और अब्रेर अंततः ईशबोसथ और शाऊल के बेटों के प्रति अपनी वफ़ादारी से अलग हो गया और दाऊद के पास

आ गया। इतिहासकार ने केवल दाऊद को यरूशलेम में राजा के रूप में स्थापित किया है, जो एक ऐसा केंद्र बिंदु है जिसे वह बनाना चाहता है। वह घटनाओं के कालक्रम और अनुक्रम को जानने में हमारी रुचि नहीं रखता है।

हम दूसरे इतिहास से इन बातों को अच्छी तरह जानते हैं। हमें यह जानने की ज़रूरत है कि यह परमेश्वर की योजना थी, और परमेश्वर अपनी योजना को पूरा कर रहा था। तो यहाँ दाऊद के योद्धा हैं।

इस सामग्री का अधिकांश भाग 2 शमूएल 23 से लिया गया है, जहाँ हमें मुख्य मुख्य नेता मिलते हैं जो दाऊद के शक्तिशाली व्यक्ति थे। फिर 3 का उल्लेख है, और 30 का भी उल्लेख है। और यह बिल्कुल स्पष्ट नहीं है कि इतिहासकार 3 और 30 में कैसे अंतर करता है, खासकर मसोरेटिक पाठ में।

और सच कहूँ तो, मुझे लगता है कि इतिहासकार के लिए, 3 और 30 के बीच अंतर करना हमारे लिए बहुत मायने नहीं रखता था। ये सभी प्रमुख प्रतिष्ठित योद्धा थे जो दाऊद को श्रद्धांजलि देते थे। वह छोटी सी कहानी जो वह पानी के बारे में बताता है, वह यरूशलेम के दक्षिण में रपाईम की घाटी में पलिशियों के आक्रमण की है।

योद्धाओं ने पलिशियों की पंक्तियों को तोड़कर कुएँ से पानी निकाला और उसे दाऊद के पास ले आए। इसलिए नहीं कि वह पानी के लिए बहुत बेताब था, बल्कि इसलिए कि वह यह दिखाना चाहता था, और इतिहासकार का कहना यही है, कि वे दाऊद का समर्थन करने के लिए अपनी जान कुर्बान कर देंगे और दाऊद के लिए जो भी करना होगा, करेंगे। पलिशियों की पंक्तियों को तोड़कर इतने खतरनाक तरीके से पानी लाने का यही मतलब है।

और जैसा कि आप जानते हैं, दाऊद ने पानी डाला क्योंकि वह इसे पूरी तरह से पवित्र मानता है। यह उन लोगों के जीवन के रक्त का प्रतिनिधित्व करता है जिन्होंने उसके लिए पानी भरने के लिए अपनी जान जोखिम में डाली। फिर वह विशेष रूप से बेनयाह के कारनामों के बारे में बात करता है।

बेनायाह वह सैनिक बनने जा रहा है जो महल के रक्षकों का मुखिया बनेगा, जो यरूशलेम में शाही दल की रक्षा करेगा। लेकिन यहाँ बेनायाह पहले के समय में है जो दो शक्तिशाली योद्धाओं को मारता है, और उन्हें शेर कहा जाता है, मोआब से एरियल, और वह आदमी जो मिस्र के विशालकाय को मारता है जिसके पास सामान्य संख्या से अधिक उंगलियाँ हैं, जैसा कि आपको याद है, उंगलियाँ और पैर की उंगलियाँ, जैसा कि आपको वह कहानी याद है। वह उन योद्धाओं का भी विशेष उल्लेख करता है जो जॉर्डन के पूर्वी हिस्से से आते हैं।

यह सिर्फ़ यहूदा ही नहीं है, बल्कि हर जगह है जहाँ ये योद्धा आते हैं, जहाँ ये योद्धा आते हैं। इसलिए, जब दाऊद एक भगोड़ा था, तब उसे सहायता मिली। और यहाँ जो महत्वपूर्ण है वह है पद 18 में वह छोटी कविता, जो एक संक्रमण के रूप में कार्य करती है।

हे दाऊद, हम तुम्हारे हैं और हमने तुम्हारे साथ वाचा बाँधी है। अब, वे छोटी-छोटी कविताएँ वे तरीके थे जिनसे उन्होंने अपनी वफ़ादारी या बेवफ़ाई को व्यक्त किया। यह 2 शमूएल में अबशालोम से भागते समय शबा का मज़ाक उड़ाने के बिलकुल विपरीत है।

शेबा अबशालोम के समर्थकों को दाऊद के खिलाफ़ एकजुट करने की कोशिश कर रहा था। वह स्पष्ट रूप से यरूशलेम के उत्तर में अपनी खुद की संपत्तियों में दिलचस्पी रखता था और उसने कहा, दाऊद में हमारा क्या हिस्सा है? दाऊद कौन है, और क्या हमें उसका अनुसरण करना चाहिए? और वहाँ एक दो-पंक्ति वाला खंभा है जो दाऊद के प्रति इस बेवफ़ाई को व्यक्त करता है। खैर, इतिहासकार इसे उलट देता है।

अबशालोम बहुत पहले की बात हो चुकी है। और अब सैनिक घोषणा कर रहे हैं, हे दाऊद, हम तुम्हारे हैं। ये सैनिक हर जगह से आते हैं, और यरूशलेम शहर में दाऊद के राज्याभिषेक का जश्न मनाने के लिए तीन दिन का उत्सव मनाया जाता है।

तो, इन अध्यायों में दाऊद राष्ट्र का राजा बन गया है। वह शाऊल का तुरंत और निर्णायक रूप से उत्तराधिकारी बन जाता है क्योंकि पूरा इस्राएल उसे अपने नेता और राजा के रूप में समर्थन देता है। इस्राएल एक राष्ट्र है।

यह युद्धरत जनजातियों की बात नहीं है। यह उत्तर और दक्षिण की बात नहीं है। इतिहासकार इस्राएल के बारे में परमेश्वर का दृष्टिकोण देखता है।

और इस्राएल के बारे में परमेश्वर का दृष्टिकोण यह है कि वे दाऊद के अधीन एक राष्ट्र हैं जो परमेश्वर द्वारा किए गए वादे को पूरा करने के लिए हैं कि यह उसका राज्य होगा।

यह डॉ. ऑगस्ट कुंकल द्वारा इतिहास की पुस्तकों पर दिए गए उनके उपदेश में है। यह सत्र 7 है, राजा दाऊद।